

भारत द्वारा अपने रक्षा अंतराल को भरने के लिए क्या करने की आवश्यकता

प्रासंगिकता : GS-3: सुरक्षा: रक्षा अवसंरचना विकास, आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियां, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में भारतीयों की उपलब्धियां; प्रौद्योगिकी का स्वदेशीकरण और नई प्रौद्योगिकी का विकास।

की-वर्ड्स: डेफएक्सपो 2022, रक्षा में आत्मनिर्भरता, भारत के रक्षा क्षेत्र में चुनौतियाँ और समस्याएँ, रक्षा आयात और निर्यात, सैन्य व्यय, रक्षा निर्माण का स्वदेशीकरण

संदर्भ:

- गुजरात के गांधीनगर में हाल ही में आयोजित डेफएक्सपो 2022 में भारत के प्रधान मंत्री ने रक्षा क्षेत्र में "आत्मनिर्भरता" (आत्मनिर्भरता) की उचित डिग्री हासिल करने के लिए भारत की आवश्यकता का आह्वान किया।



मुख्य विचार:

- डेफएक्सपो का फोकस भारत पर था यानी केवल घरेलू भारतीय संस्थाओं को भाग लेने की अनुमति थी।
- प्रधान मंत्री ने कहा कि "मेक इन इंडिया" रक्षा क्षेत्र में एक सफलता की कहानी बन रही है।
 - भारतीय रक्षा निर्यात पिछले पांच वर्षों में आठ गुना बढ़ा है।
 - भारत दुनिया के 75 से अधिक देशों को रक्षा सामग्री और उपकरण निर्यात कर रहा है।
 - 2021-2 में, भारत से रक्षा निर्यात 1.59 बिलियन डॉलर (लगभग 13,000 करोड़ रुपये) तक पहुंच गया।
- हालांकि भारत सरकार ने अब 5 बिलियन \$ (40,000 करोड़ रुपये) का लक्ष्य निर्धारित किया है, जिसे साकार करने के लिए मिशन-मोड संकल्प की आवश्यकता होगी।

क्या आप जानते हैं?

- स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (एसआईपीआरआई) द्वारा प्रकाशित नवीनतम आंकड़ों के अनुसार।
 - विश्व सैन्य खर्च 2021 में बढ़ना जारी रहा, महामारी के आर्थिक पतन के बावजूद 2.1 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया।
- 2021 में सबसे ज्यादा खर्च करने वाले पांच देश अमेरिका, चीन, भारत, ब्रिटेन और रूस थे।
 - इन 5 देशों ने मिलकर 62% खर्च किया और अकेले अमेरिका और चीन ने 52% खर्च किया।
- भारत का 76.6 अरब अमेरिकी डॉलर का सैन्य खर्च दुनिया में तीसरे स्थान पर है।
 - यह 2020 से 0.9% और 2012 से 33% अधिक था।

रक्षा क्षेत्र अनेक समस्याओं से ग्रस्त है

- हालांकि भारत 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की आकांक्षा रखता है लेकिन कई राष्ट्रीय सुरक्षा अपर्याप्तताओं का सामना करता है।
- प्रमुख सैन्य वस्तु-सूची मदों के लिए विदेशी आपूर्तिकर्ताओं (परंपरागत रूप से पूर्व USSR अब रूस) पर उच्च निर्भरता सूचकांक।
 - यह निर्भरता एक व्यापक राष्ट्रीय भेद्यता को प्रेरित करती है और सार्थक और विश्वसनीय रणनीतिक स्वायत्तता के लिए भारत की खोज को कमजोर करती है।
- लड़ाकू क्षमता में मौजूदा अंतराल प्रमुख राष्ट्रीय सुरक्षा हितों की रक्षा करने की भारतीय क्षमता में कमी को उजागर करता है। उदाहरण के लिए- चीन के साथ गलवान मुद्दा।
- यूक्रेन पर रूसी आक्रमण, कोविड-19 महामारी, वैश्विक अर्थव्यवस्था और संबंधित आपूर्ति श्रृंखलाओं को बाधित करने वाले रुपये के कमजोर होने जैसी अप्रत्याशित मजबूरियां, भारतीय रक्षा विनिर्माण पारिस्थितिकी तंत्र के सामने आने वाली चुनौतियों को और बढ़ा देती हैं।
- निजी विनिर्माताओं में रिटर्न पर जोखिम को देखते हुए इस क्षेत्र में निवेश करने के लिए प्रोत्साहन की कमी है।

स्वदेशीकरण की दिशा में हाल के रक्षा प्रयास

- स्वदेशी रूप से डिजाइन और निर्मित विमानवाहक पोत आईएनएस विक्रान्त की कमीशनिंग।
- INS अरिहंत से एक SLBM (सबमरीन-लॉन्च बैलिस्टिक मिसाइल) की फायरिंग।
- एक प्रमुख निजी क्षेत्र की संस्था को एक सैन्य परिवहन विमान (C 295) के निर्माण का पुरस्कार देना।
- भारत में बने प्रचंड एलसीएच (लाइट कॉम्बैट हेलीकॉप्टर) को शामिल करना।
- 155 मिमी की तोपें देश में डिजाइन और निर्मित की जा रही हैं।
- भारत-रूस ने भारत में कलाशिकोव-प्रकार के हल्के हथियार/छोटे हथियारों के निर्माण का सौदा किया।

रक्षा क्षेत्र के स्वदेशीकरण में प्रमुख चुनौतियाँ क्या हैं?

- भारत के पास अभी तक किसी भी महत्वपूर्ण लड़ाकू हथियार/प्लेटफॉर्म को पूरी तरह से डिजाइन और निर्माण करने की घरेलू क्षमता नहीं है।
- यह उन महत्वपूर्ण घटकों के लिए विदेशी आपूर्तिकर्ता पर निर्भर है जो उपकरण के युद्ध सूचकांक के मूल में हैं।
 - उदाहरण के लिए: भारत एयरबस, फ्रांस के सहयोग से C295 परिवहन विमान का निर्माण करने जा रहा है।
 - वास्तव में इंजन, एवियोनिक्स, लैंडिंग गियर आदि विदेश से आएंगे और एकीकरण भारतीय इकाई द्वारा किया जाएगा।
- रक्षा उपकरणों के स्वदेशीकरण के लिए राष्ट्रीय अनुसंधान और विकास (आर एंड डी) में पर्याप्त निवेश का अभाव।

- विश्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार भारत ने रक्षा क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास के लिए सकल घरेलू उत्पाद (2018) का लगभग 0.66 प्रतिशत आवंटित किया जबकि विश्व औसत 2.63 प्रतिशत है।
- भारत कुछ अन्य देशों के लिए तुलनीय व्यक्तिगत अनुसंधान एवं विकास आवंटन (जीडीपी का प्रतिशत) से काफी पीछे है: इज़राइल 5.44; यूएसए 3.45; जापान 3.26; जर्मनी 3.14; चीन 2.4 आदि।
- सीमित निजी भागीदारी:
 - एक अनुकूल वित्तीय ढांचे की कमी के कारण रक्षा क्षेत्र में निजी क्षेत्र की भागीदारी बाधित है।
 - हमारा रक्षा उत्पादन आधुनिक डिजाइन, नवाचार और उत्पाद विकास से लाभान्वित नहीं हो पा रहा है।
- मतदाताओं को लुभाने के साधन के रूप में राष्ट्रीय सुरक्षा
 - वर्षों से सरकारों ने राजनीतिक लाभ के लिए एक उपकरण के रूप में राष्ट्रीय सुरक्षा का उपयोग किया है और समग्र युद्ध और विनिर्माण क्षमताओं की समीक्षा नहीं की गई है और उन्हें उचित रूप से परिष्कृत नहीं किया गया है।

आगे की राह

- राष्ट्रीय अनुसंधान एवं विकास प्रयासों को निरंतर प्रोत्साहन प्रदान करना।
 - सुरक्षा पर कैबिनेट समिति (सीसीएस) को ऐसी पहल करने की आवश्यकता है जो बोर्ड (राज्य, कॉर्पोरेट और शिक्षा) में रक्षा में आर एंड डी पर ध्यान केंद्रित करती है क्योंकि भारत को एक विश्वसनीय सैन्य शक्ति के रूप में उभरने के लिए यह महत्वपूर्ण है।
- भारत को "सॉफ्ट" श्रेणी के निर्यात (कपड़े, हेलमेट और निगरानी उपकरण) की वर्तमान सूची की तुलना में रक्षा निर्माण और निर्यात की सभी श्रेणियों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
- रक्षा निर्माण क्षेत्र में भारतीय एमएसएमई और डीपीएसयू की क्षमता का उपयोग करने और चैनल बनाने के लिए देश भर में समर्पित रक्षा औद्योगिक गलियारों का विस्तार करना आवश्यक है।
- सेमीकंडक्टर चिप्स के डिजाइन और निर्माण के लिए भारतीय दिमाग का उपयोग करें, जो राष्ट्रीय समृद्धि और सैन्य शक्ति के लिए महत्वपूर्ण हैं।

निष्कर्ष:

- भारत 1970 के दशक के बाद से दक्षिण कोरिया और चीन की तरह औद्योगिक डिजाइन और विनिर्माण क्रांति से लाभ नहीं उठा सका।
- वर्तमान में वैश्विक सेमीकंडक्टर/चिप निर्माण प्रयासों में भारतीय दिमागी शक्ति बहुत दिखाई दे रही है।
- इसलिए भारत के पक्ष में इस तकनीकी-रणनीतिक परिदृश्य को बदलने की आवश्यकता है और साथ ही सार्थक स्वदेशीकरण और विश्वसनीय "आत्मनिर्भरता" निरंतर धन सहायता, धैर्य और एक पारिस्थितिकी तंत्र की मांग करता है जो इस प्रयास का पोषण करेगा।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न -

Q. भारत के रक्षा क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें

1. केंद्रीय बजट 2022-23 के अनुसार बजट का रक्षा घटक 8 लाख करोड़ रुपये से अधिक है।
2. संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन के बाद भारत का सैन्य खर्च दुनिया में तीसरा सबसे अधिक है।
3. संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन के सैन्य खर्च में वैश्विक सैन्य व्यय का 50% से अधिक शामिल है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनें:

- a) केवल 1 और 2
- b) केवल 1 और 4
- c) केवल 2 और 3
- d) केवल 1, 2 और 3

उत्तर : (c)

व्याख्या :

- केंद्रीय बजट 2022-23 के अनुसार बजट का रक्षा घटक लगभग 5.25 लाख करोड़ है।
इसलिए, कथन -1 गलत है।
- स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (SIPRI) द्वारा प्रकाशित नवीनतम आंकड़ों के अनुसार।
विश्व सैन्य खर्च 2021 में बढ़ना जारी रहा, महामारी के आर्थिक पतन के बावजूद 2.1 ट्रिलियन अमरीकी डालर के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया।
- 2021 में पांच सबसे बड़े खर्चकर्ता अमेरिका, चीन, भारत, यूके और रूस थे।
इन 5 देशों ने मिलकर 62% खर्च किया और अकेले अमेरिका और चीन ने 52% खर्च किया।
- भारत का 76.6 बिलियन अमरीकी डालर का सैन्य खर्च दुनिया में तीसरा सबसे बड़ा स्थान है।
इसलिए कथन-2 और कथन-3 सही हैं।

मुख्य परीक्षा प्रश्न:

Q. रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता भारत की रणनीतिक स्वतंत्रता और स्वायत्तता की कुंजी है, चर्चा करें।